कृभको

नवम्बर माह के कृषि कार्य

किसान बहिनों एवं भाईयों, नमस्कार ! नवम्बर माह जिसे आप कार्तिक-मार्गशीर्ष भी कहते हैं दीपावली भाईदूज व ईद के त्यौहार लेकर आता है । मौसम भी बहुत सुहावना हो गया है व रबी की फसलों की बीजाई बहुत जोरों पर है । हम आपके प्रश्नों पर आधारित नवम्बर माह के कृषि कार्य बताएगें । लेख में नाप-तोल प्रति एकड के हिसाब से हैं ।

तीन जरूरी बातें -

- **प्रमाणिक आदान** (**प्रगतिशील खेती)** - कुछ श्रेणी के कृषि आदान जैसे कि रोगरोधक फसल किस्में, शुद्ध दवाईयां व खाद, जैव खाद , कृषि यंत्र , सिंचाई जल , ऋण तथा कृषि ज्ञान सिर्फ प्रमाणित स्त्रोतों से लेने पर ही आपको बिना कोई परेशानी के भरपूर व लाभदायक पैदावार मिल सकती है । किसी घटिया स्त्रोत से ये आठों कृषि आदान सस्ते व आसानी से तो मिल सकते हैं परंतु उनमें मिलावट व धोखा हो सकता है जिससे फसल में भारी नुकसान उठाना पड सकता है । कृपया सावधान रहें व लालच में न आयें ।
- **बीजोपचार** (**सर्वोत्तम सुरक्षा)** - हर रोज अखवार, रेडियों व दूरदर्शन में आपको खडी फसलों में विशेषकर सब्जियों, फलों व चारे पर छिडकी दवाईयों का मानव व पशुओं पर पडे बुरे प्रभाव की खबरें मिलती रहती है इन दवाईयों के बुरे प्रभाव को हम बीजोपचार से उसी तरह समाप्त कर सकते है जैसेकि बच्चों के पैदा होते ही बीमारी-रोधक टीके लगाकर उन्हें सारी ऊमर के लिए सुरक्षित कर लेते हैं । बीजापचार में 1 कि.ग्रा. बीज के लिए २-३ ग्राम दवाई लगती है तथा 1 एकड में सिर्फ १०-१५ रूपये तक का खर्चा है । सही दवाई व ढग़ से से किया गया बीजोपचार से फसल पर बीमारी नहीं लगेगी तथा दवाईयां छिडकने पर खर्चा नहीं करना पडेगा । यदि २-३ दवाईयों से एक साथ बीजोपचार करना हो तो बीज पर सबसे पहले कीटनाशक, फिर बीमारी नाशक तथा सबसे बाद जैव-खाद का उपचार करें । इससे स्वस्थ्य व पौष्टिक फसल के साथ्-साथ पैसे की बहुत बचत होती है । यह फसल सुरक्षा का बहुत ही सुरक्षित व कामयाब तरीका है, इसे जरूर अपनाएं ।
- **मिश्रित खेती** (**अधिक लाभ)** - छोटे किसानों तथा कम सिंचित हालत में मिश्रित खेती बहुत ही लाभदायक पाई जा रही हैं । गेहूं व जौ के साथ चना , मसूर, सरसों आदि अधिक पैदावार व शुद्ध लाभ द रहे हैं इन्हें भी अजमाईये ।

गेहूं - अच्छी पैदावार के लिए सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर के तीसरे सप्ताह तक बीजाई कर सकते है जबकि औसतन तापमान २२ डिग्री सैल्सियस होता है । वारानी क्षेत्रों में उपलब्ध नमी के आधार पर जैसे कि अक्टूबर माह में बताया है , बीजाई का फैसला लें । उन्नत किस्मों में एच.डी-२००९, डब्ल्यु.एच.१५७, डब्ल्यु.एच-२८३, डब्ल्यु.एच-१४७, डब्ल्यु.एच-४१६, डब्ल्यु.एच. ५४२ व एच.डी-२३२९ हरियाणा में तथा पी.वी.डब्ल्यु-३४३, पी.वी.डब्ल्यु-२७४, डब्ल्यु.एच-५४२, पी.वी.डब्ल्यु.-१५४, पी.वी.डब्ल्यु.-२३३, पी.वी.डब्ल्यु-३४ पंजाब में 1 से २५ नवम्बर के बीच सिंचित भूमि में लगाई जा सकती है । कठिया (डयूरम) गेहूं की बीजाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक कर दें । बीज प्रमाणित स्त्रोतों से लें तथा अपने क्षेत्र के हिसाब से रोगरोधक किस्म लगायें ।

दीमक वाली जमीनों के ४० कि.ग्रा. बीज को ६० मि.ली. क्लोरपाइरीफास २० ई.सी. या १४० मि.ली. इण्डोसल्फान ३५ ई.सी. से उपचारित करें । इसके बाद ४० ग्राम टैब्यूफोनाजोल से सूखा उपचार करें जिससे कंगयारी व करनाल वंट से बचाव होगा । फिर एजोटोवैक्टर वायोफर्टिलाइजर को ४ पैकैट (२०० ग्राम) से बीजोपचार करें तथा छाया में सुखा कर बोयें । इससे नत्रजन की कमी पूरी हो जाती है । बीजाई बीज-उर्वरक ड्रिल से करें तथा लाईनों में ८ ईंच फसला रखें । पछेती बीजाई में फासला कम करके ७ ईंच कर दें । बौनी किस्में २ ईंच तथा लम्बी ३ ईंच गहरा बोयें । धान-गेहूं फसल चक्र वाले क्षेत्रों में जीरो-टिल मशीन से बुआई करने से खर्चा भी कम आता है और पैदावार भी ज्यादा मिलती है । इससे खेत में नमी बची रहती है तथा बारानी क्षेत्रों में ज्यादा लाभदायक होगी । बीजाई पर बौनी किस्मों में १.५ बोरा यूरिया (बहुत हल्की मिट्टी में यूरिया को ३ भागों डालना अधिक लाभदायक होगा), ३ बोरे सिंगल सुपर फासफेट तथा 1 बोरा म्यूरेट आफ पोटाश व १०-२५ कि.ग्रा. जिंक सल्फेट डालें । हल्की मिट्टी में मैगनीज व सल्फर की कमी नजर आने लगती है । यदि सिंगल सुपर फास्फेट डाला है तो सल्फर की कमी

नहीं होगी अन्यथा १०० कि.ग्रा. जिप्सम बीजाई से पहले मिट्टी में डालें । मैगंनीज की कमी धान-गेहूं चक्र में गेहूं के पत्तों की नाडियों के बीच हल्के पीले सलेटी से गुलाबी भूरे रंग की धारियों या धब्बों में दिखाई देते है । रोकथाम के लिए ०.५ प्रतिशत मैगनीज सल्फेट (१ कि.ग्रा. २०० लीटर पानी में) पहली सिंचाई से २-३ दिन पहले छिडकें । खरपतवार नियंत्रण व्हील हो / व्लेड से कर सकते है या खरपतवारनाशक जैसे कि जंगली जई व कनकी के लिए आईसोप्रोटूरान ७५ प्रतिशत (डी.ई.नोसिल) ५०० ग्राम गेहूं बीजाई के २१ दिन बाद पहली सिंचाई से १-२ दिन पहले छिडकें । जिन क्षेत्रों जंगली जई में आईसोप्रोटूरान प्रतिरोधकता आ गई है वहां 1 लीटर डाइक्लोफोप मिथाइल (ऐलावजान) को २५० लीटर पानी में बीजाई के ३०-३५ दिन बाद छिडकें । चौडी पत्ती वाले खरपतवारों का निंयत्रण २५० ग्राम २, ४-डी सोडियम साल्ट (८० प्रतिशत) या ३०० मि.ली. २-४ डी एस्टर (३४.६ प्रतिशत) को २५० लीटर पानी से घोलकर बीजाई ३०-३५ दिन अन्दर करें । जंगली मटर, रस्सा व हिरणखुरी नियंतत्र के लिए दवाई की मात्रा दोगुनी कर दें । चना, सरसों या अन्य चौडी पत्ती वाली फसलें गेहूं में मिश्रित हो तो या गेहूं की एच.डी-२००९ तथा डब्ल्यु.एच-२८३ लगाई हो तो २, ४-डी बिल्कुल न प्रयोग करें । यदि खेत में सतही टिण्डा का प्रकोप है तो १० कि.ग्रा. मिथाइल् पैराथियान २ प्रतिशत का धूडा करें । यदि सूत्रकृमि की संख्या खेत में ज्यादा हो तो बीजाई के समय खाद के साथ ही ६ कि.ग्रा. एल्डीकार्व (१० जी) या १३ कि.ग्रा. कार्वोपयूरान (पयूराडान-३जी) मिलाकर खेत में डालें ।

जौ, चना, शरदकालीन मक्की, मसूर व दाल मटर - इन फसलों के बारे में हम अक्टूबर माह में बता चुके हैं । इन फसलों को १५ नवम्बर तक बीज सकते हैं । जौ की पिछेती बुआई के लिए सी-१६४ किस्म का ४५ कि.ग्रा. बीज लें । यह किस्म पीला रतुआ, हैलमिन्थोस्पोरियम व मोल्या रोग सहनशील है । अक्टूबर में बोई फसल को ४०-५० दिन बाद खरपतवार निकाल कर सिंचाई करें । **शरदकालीन मक्का** में फालतू पौधों को निकाल कर आपसी दूरी ८ ईंच रखें । यदि बीजाई मेढ़े बनाकर करनी हो तो, मेढ़े पूर्व से पश्चिम दिशा में २४ ईंच दूर होनी चाहिए तथा बीज २-२.५ इंच गहरा लगायें । अक्टूबर में लगी फसल में बीजाई के ३० दिन तक भी खरपतवार नाशक अट्राजीन ५०० ग्राम पानी में घोलकर स्प्रे कर सकते है । पहली सिंचाई ३० - ३५ दिन तक कर दें । यदि दाना मटर फसल पर सिाप का हमला हो तो ५०० मि.ली. एण्डोसल्फान ३५ ई.सी. २५० लीटर पानी में घोलकर छिडकें । मसूर व चने में जिंक की कमी होने पर ०.५ प्रतिशत जिंक सल्फेट और २.५ प्रतिशत यूरिया का घोल बनाकर १०-१५ दिन के अन्तराल पर २ स्प्रे करें । चने की पिछेती बीजाई के लिए हरियाणा चना नम्बर 1 का २० कि.ग्रा. बीज उपचार के बाद बोयें । अक्टूबर में बोये चने में यदि उखेडा रोग दिखाई दे तो रोगग्रस्त पौधौं को नष्ट करके जला दें ।

सरसों, तोरिया, राया व तारामीरा - अक्टूबर में लगाई फसल में आधा बोरा यूरिया पहली सिंचाई के बाद डाल दें । बीजाई के तीन सप्ताह के बाद 1 गुडाई करें तथा फूल निकलने पर 1 सिंचाई जरूर दें । इन फसलों में कीट नियंत्रण अक्टूबर माह की तरह करें । साग के लिए लगाई सरसों पर दवाई का प्रयोग कम से कम करें तथा छिडकाव के १५ दिन बाद ही काटें । परंतु चेपा लगने पर २५० मि.ली. मैलाथियान ५० ई.सी. को २५० लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें । दूसरा छिडकाव १० दिन बाद करें । नवम्बर में बीमारियों की रोगथाम के लिए ६०० ग्राम मेन्कोजेव (डाइथेन एम-४५) का १५ दिन के अन्तर पर ३-४ छिडकाव करें । अलसी - यदि चूर्णी या पाउडरी मिल्डयू रोग नजर आये तो ८०० ग्राम घुलनशील गंधक माइक्रोसुल या कैराथेन २ प्रतिशत का घोल छिडके ।

गन्ना - गन्ने में २५ दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहें । अगेती व मध्यम पकने वाली किस्में कटाई के लिए तैयार है, इनकी कटाई की योजना गन्ना मिल की जरूरत के हिसाव से बनायें । कटाई से पहले खेत में पानी न लगायें व पौधों को जमीन से लगाकर काटें । खडी फसल में पाइरिल्ला व सफेद मक्खी से रोकथाम के लिए पिछले माह के लेखों को देखें ।

आलू - नवम्बर में आलू में मिट्टी जरूर चढ़ा दें तथा डोलियों के बीच बनी नालियों के द्वारा सिंचाई करें । पानी आधी नाली भरकर दें तांकि पपडी न जम सके । फसल को चेपा व विषाणु रोग से बचाव के लिए २५० मि.ली. मेटासिस्टाक्स २५ ई.सी. या ६० मि.ली. रोगोर ३५ ई.सी. या १०० मि.ली. डाईमेक्रान ८५ एस.एल. को २५० लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें । अगेती झुलसा रोग के लिए ६०० ग्राम व्लाइटाक्स या डाइथेन एम-४५ या जाईनव २५० लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें । दूसरा छिडकाव १५ दिन बाद फिर करें ।

चारा - चारे के लिए जई नवम्बर माह में भी लगा सकते है । अक्टूबर में बोयी फसल को पौना बोरा यूरिया पहली सिंचाई पर नवम्बर में डालें । अधिक कटाई वाली फसल में ६० दिन वाद पहली कटाई करके सिंचाई दें तथा पौना बोरा यूरिया डाल दें । अक्टूबर में बोई बरसीम व रिजका की पहली कटाई ६० दिन बाद करें इसके बाद ३० दिन के अन्तर पर कटाईयां कर सकते है । फसल में १०-१५ दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहे । पुरानी रिजका फसल में नवम्बर में ४ बोरे सिंगल सुपर फास्फेट डालने से फसल अच्छी बढ़ती है ।

मसाले : धनिया - धनियां हर जमीन में नवम्बर के पहले सप्ताह तक बोया जा सकता है । इसके लिए स्थानीय किस्म का ८ से १० कि.ग्रा. बीज को हल्के से मसल कर दो-चार हिस्सों में तोड दें, हर हिस्सा एक पूरा बीज होता है । इसके बाद २० ग्राम थिराम से उपचारित करके 1 फुट दूर लाईनों में बोयें । बीजाई पर आधा बोरा यूरिया व एक बोरा सिंगल सुपर फास्फेट डालें । बाकी आधा बोरा यूरिया फूल लगने पर डालें । नवम्बर के अंत तक एक हल्की गुडाई से खरपतवार निकाल दें तथा सिंचाई भी करें । फसल अप्रैल में पकती है तथा २-३ क्विंटल पैदावार देती है । **सौंफ** - यह ठंडी मौसम की फसल है तथा हल्की दोमट मिट्टी में अच्छी होती है व नवम्बर के पहले सप्ताह तक लग सकती है । स्थानीय किस्म का ४ कि.ग्रा. बीज १८ ईंच दूर लाईनों में २ ईंच गहरा बोयें । बीजाई पर आधा बोरा यूरिया व 1 बोरा सिंगल सुपर फास्फेट डालें तथा बाकी आधा बोरा फूल आने पर । खरपतवार नियंत्रण के लिए १-२ गुडाईयां जरूर करें । पहली सिंचाई १५ दिन बाद तथा बाकी आवश्यकतानुसार करते रहे । सोंये - नवम्बर के पहले सप्ताह तक लगा सकते है । स्थानीय किस्म का २ कि.ग्रा. बीज को १८ ईंच दूर लाईनों में २ ईंच गहरा बोयें । बीजाई पर पौना बोरा यूरिया व 1 बोरा सिंगल सुपर फास्फेट तथा पौना बोरा यूरिया फूल आने पर डालें । पहली सिंचाई १५ दिन बाद बाकी आवश्यतानुसार । फसल मई के शुरू में पककर ३-४ क्विंटल पैदावार देती हैं ।

मेथी - मेथी एम.एल. १५० किस्म का १२ कि.ग्रा. बीज ८ ईंच दूर लाईनों में २ ईंच गहरा नवम्बर के पहले सप्ताह तक बोयें । बीजाई पर १० कि.ग्रा. यूरिया तथा आधा बोरा सिंगल सुपर फास्फेट डालें । खरपतवार नियंत्रण तथा सिंचाई समय-समय पर करते रहें । चेपा नियंत्रण के लिए २५० मि.ली. मेलाथियान ५० ई.सी. १०० लीटर पानी में घोलकर छिडकें । फसल अप्रैल में पककर ५-६ क्विंटल पैदावार देती है । **जीरा** - शुष्क क्षेत्रों में जहां मौसम ठंडा रहता है व उचित निकास वाली दोमट भूमि में जीरा हो सकता है । जीरे की बीजाई पूरा नवम्बर माह में हो सकती है । उन्नत किस्मों में आर.एस.१, एम.सी. ४३, गुजरात जीरा 1, आर.जेड १९ व आर.जेड २०९ हैं । इसके लिए ५ कि.ग्रा. बीज को १० ग्राम वाविस्टिन से उपचारित करके ९ ईंच दूर लाईनों में सिर्फ आधा ईच गहरा बोयें । बीजाई पर आधा बोरा यूरिया तथा १.५ बोरा सिंगल सुपर फास्फेट डालें । बीजाई के समय उचित नमी बनाये रखें तथा १० दिन बाद पहली सिंचाई करें व खरपतवार निकालें ।

सब्जियां - पहले रोपी हुई **फूल गोभी व पत्ता गोभी** को सिंचाई देकर २ बोरा यूरिया डालकर निराई-गुडाई व पौधों पर मिट्टी चढ़ायें । हल्की सिंचाई १०-१५ बाद करते रहे । कीडों से बचाव के लिए ४०० मि.ली. मैलाथियान ५० ई.सी. को २५० लीटर पानी में मिलाकर छिडकें । **गाजर, मूली, शलजम** - अगस्त-सितम्बर माह में लगाई फसल तैयार है तथा निकालने से २-३ दिन पहले हल्की सिंचाई करने से खुदाई आसान हो जाती है । पिछेती फसल पर यदि कीट नजर आये तो मैलाथियान छिडकें । **मटर** - अर्कल किस्म ७ नवम्बर तक तथा वोर्नबीला व लिंकन १५ नवम्बर तक बो सकते है । पालक व मेथी - हर हपते हल्की सिंचाई देते रहें । पहली कटाई ३० दिन बाद फिर १५-२० दिन पर करें । पालक में हर कटाई के बाद एक बोरा तथा मेथी में आधा बोरा यूरिया डालें । **टमाटर** - अगस्त में रोपी फसल में फल आ रहे है । हर १० दिन बाद हल्की सिंचाई करते रहे । फल छेदक व अन्य कीटों से बचाव के लिए ०.१ प्रतिशत मैलाथियान हर १५ दिन पर फल तोडने के बाद छिडकें । फसल को पाले से बचाव के लिए पौलिथीन से ढकें या रात को धुआ करें । जनवरी-फरवरी में टमाटर रोपाई के लिए नवम्बर में नर्सरी बोयी जा सकती है । **बैगन** - जुलाई में रोपी बैगन की फसल पर फल लगे है यदि फलछेदक का हमला हो तो टमाटर की तरह बचाव करें । यदि पाले से बचाव हो सके तो बैगन की रोपाई नवम्बर में भी हो सकती है ।

फल - नींबू, माल्टा, मौसमी व किन्नू के फलों का पकने का समय आ रहा है । फलों को ध्यान से उतारें व चयन करके डिब्बा-भराई करें । ध्यान रहे कि इससे पौधों को नुकसान न होने पाये । बेर के 1 वर्ष वाले पौधे को २५० ग्राम व २, ३ साल वाले को ५०० ग्राम व 1 कि.ग्रा. क्रमशः यूरिया देकर गुडाई करें । फूल - नवम्बर में फूलों के खिलने का समय है । उनमें सिंचाई व गुडाई आवश्यतानुसार करते रहे ।

किसान भाई नवम्बर में होने वाली वाकी कृषि क्रियाओं के बारे में जानकारी हमसे सीधा फोन (०१२०-२५३५६२८) अथवा ई-मेल krishipramarsh@kribhco.net से भी संपर्क कर सकते है ।